श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

श्लोक १७

आकाशगंगा, मन्दाकिनी नदी, जो सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त है और जिसका
फेन और बुदबुदे, उसमें निहित तारों व ग्रहों की चमक के कारण और भी शोभायमान लगते हैं,
ऐसी वह आकाशगंगा आपके सिर पर स्थित एक जलकण से अधिक प्रतीत नहीं होती।
उसी नदी ने इस जगत को समुद्र से घिरे हुए सप्तद्वीपों के समान बना दिया है।
इसीसे आपके दिव्य शरीर की व्यापकता को समझा जा सकता है।

अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवादित। अंग्रेज़ी भाषान्तर, *The Nectar of Chanting* से उद्धृत [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९८४] पृ १४५।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।